जून 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जून 2026 में प्रकाशित है

शमन महादीक्षा

(पापमोचिनी तृतीया - 2 जुलाई 2026)

शमन अर्थात् जीवन चक्र दोष जो चाहे इस जन्म के हों अथवा पूर्व जन्मों के उनको समाप्त करना। सद्गुरुदेव अपने शक्तिपात द्वारा चित्त पर आये हुए दोषों का नाश कर साधक के चित को प्रकाश से आलोकित कर देते है जिससे शिष्य के कर्म आसक्ति के बंधन से मुक्त हो जाते है, चेतना में निर्मलता का प्रवाह होने से विकास यात्रा में गति आ जाती है और संचित पुण्यों का फल प्राप्त होने लगता है।

जब एक बार शुद्धिकरण और शमन की यह क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तो जीवन यात्रा में आनन्द, शांति, शीतलता प्राप्त होने लगती है। भारहीन, द्वेष मुक्त जीवन यात्रा परम सुख प्रदायिनी होती है।

साधक को जीवन में जब भी अवसर प्राप्त हो अपने चित पर वर्तमान युग के क्रियाकल्पों के कारण आई अशुद्धि के निवारण हेतु शमन महादीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिये। जिस प्रकार शारीरिक शुद्धि के लिये निरन्तर स्वच्छता आवश्यक है उसी प्रकार आध्यात्मिक, भौतिक उन्नति के लिये चित्त की शुद्धता निरन्तर आवश्यक है।

- शमन महादीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

पापांकुशा साधना

(पापमोचिनी तृतीया - 2 जुलाई 2026)

ओजवान, ऊर्जावान स्वस्थ शरीर के लिये शरीर के आन्तरिक अंगों का सुचारु रूप से चलना आवश्यक है उसी प्रकार मन, चित्त को निर्मल रखने के लिये, शुद्ध रखने के लिये निरन्तर शुद्धि आवश्यक है जिससे आत्म प्रकाश से प्रकाशित मन, चित्त शुद्ध कर्म कर सके।

इस क्रिया को पापांकुशा भी कह सकते है। इस क्रिया को कर्म बंधन से मुक्ति भी कह सकते है। इस क्रिया को शमन भी कह सकते है कि हम अपनी स्वयं की शक्ति द्वारा उन विरोधी तत्वों का संहार कर रहे है जो हमारे मन और देह को पीड़ित कर रही है। पापांकुशा साधना कल्पतरु की भांति है। जीवन को ऊर्जावान बनाये रखने के लिये और यम-नियम अनुसार जीवन के संचालन के लिये सतत् रूप से पापांकुशा साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 700/-

आपदा उद्धारक बटुक भैरव साधना

(बटुक भैरव जयन्ती - 24 जून 2026 अथवा किसी भी रविवार)

बटुक भैरव 'रुद्र' का स्वरूप है जो साधक को बाल्य चेतना, ऊर्जा, शक्ति, विचार, नवाचार प्रदान करते है जिससे साधक अपनी बाधाओं, आपदाओं, समस्याओं को समाप्त कर आनन्द के साथ सुखी जीवन प्राप्त करता है। बटुक भैरव के साधक में न तो छल होता है, न कपट, न भय, न ही सीमाओं का बंधन होता है। वह मानसिक रूप से स्वतंत्र और ऊर्जा से भरा होता है। हर क्षण कुछ नया करने के लिये प्रेरित होता है। बटुक भैरव साधक के अन्दर उस शक्ति भाव को जाग्रत करता है जो समय, समाज और अनुभवों के बोझ से मुक्त होती है। वास्तव में बटुक भैरव सहजता और सरलता के साथ शक्ति का समावेश है। यह वह शाक्ति है जो विनाश नहीं करती, बल्कि सृजन का मार्ग प्रशस्त करती है। इसी कारण बटुक भैरव को आपदा उद्धारक कहा जाता है।

बटुक भैरव साधक को केवल साहस और ऊर्जा ही प्रदान नहीं करते है बल्कि साहस को सही दिशा तथा ऊर्जा को सही उपयोग का मार्ग प्रदान करते है। बटुक भैरव साधक को सिखाते हैं कि असफलता अंत नहीं है, बल्कि एक नयी शुरुआत का अवसर है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 550/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 17)

भैरव दीक्षा

(बटुक भैरव जयन्ती - 24 जून 2026 अथवा किसी भी रविवार)

भैरव शिव समान ऐसे देव हैं जो कि साधक द्वारा किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना स्वीकार करते हुए, प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत-प्रेत, पिशाच के अधिपति हैं।

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक भैरव पूजन नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना या आकस्मिक बाधा नहीं आये। हमारे परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ रहे तथा विशेष रूप से बालकों के स्वास्थ्य हेतु भी 'भैरव उपासना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। भैरव साधना सद्गुरु द्वारा भैरव शक्तिपात दीक्षा ग्रहण कर ही सम्पन्न करनी चाहिये।

- भैरव दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 19)

वार्ताली तीव्र तंत्र स्तम्भन साधना

(आषढ़ीय गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026 अथवा किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी अथवा अमावस्या)

वार्ताली साधना, शिव साधना का एक प्रमुख भाग है, आदि देव शिव की यह विशेष शक्ति वार्ताली शत्रुहन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन की शक्ति हैं। जब शत्रु अत्यन्त प्रबल हो जाए और सामान्य प्रभाव से वश में न आए तो तंत्र शास्त्र में प्रमुख इस साधना का प्रयोग करना चाहिए।

तांत्रिक वार्ताली साधना निम्न कार्यों के लिए सम्पन्न की जाती है - ✯ जब व्यापार में निरन्तर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयास करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों। ✯ जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें ✯ जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों और आपको तंग करने का प्रयास करते ही रहें। ✯ किसी कार्य द्वारा मानहानि, अपयश की आशंका हो। ✯ किसी मुकदमे में हार की संभावना हो अथवा मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो। ✯ जब मानसिक अशांति बढ़ जाए और आगे बढ़ने का कोई मार्ग न मिले। ✯ जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाने लगें। ✯ घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगें और घर में हर समय कलह, रोग का वातावरण रहने लगे। ✯ घर पर भूत-प्रेत-पिशाच का डर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगें।

स्तम्भन एक गूढ़ शब्द है। जिसका अर्थ है शत्रु को जड़ कर देना, पत्थर सदृश कर देना। उसकी बुद्धि, शक्ति एवं मति को स्तम्भित कर देना।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 23)

विंध्यवासिनी साधना

(विंध्यवासिनी सिद्धि दिवस - 20 जून 2026 अथवा किसी भी शुक्रवार)

'विंध्यवासिनी साधना' मां दुर्गा का ही रक्षा स्वरूप है, जो अपने साधक की हर क्षण रक्षा करती हैं, उसको जीवन की विभिन्न उलझनों से, परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं, और यदि साधक इस सिद्धि को प्राप्त कर ले तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप-प्रभाव नहीं पड़ सकता, यहां तक कि कोई तांत्रिक 'कृत्यावार' करता है, जो एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग है, वह भी निष्फल हो जाता है। विंध्यवासिनी तीव्र से तीव्र प्रहारों को भी निष्फल करने की अचूक साधना है, जो बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के लिए भी दुर्लभ है, इस विद्या को सिद्ध कर लेने के बाद, अन्य साधनाओं में स्वतः ही शीघ्र सफलता मिलने लग जाती है।

श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न की गई विंध्यवासिनी साधना साधक को तंत्र के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। सुव्यवस्थित तंत्र प्रक्रिया से साधक का उर्ध्वगामी विकास होता है और उसके मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, धन-लाभ इत्यादि में अभिवृद्धि होती है। भय, शत्रु, असफलता इत्यादि से मुक्त साधक आत्मबोध से आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 12)

आद्या विभूषिणी योगिनी साधना

(योगिनी एकादशी - 10 जुलाई 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

योगिनी श्रेष्ठ नारी स्वरूपा, पूर्ण चैतन्यता से युक्त होती है। इनके रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है। अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा दैदीप्यमान मुखमण्डल, समोहित करती झील सी गहरी आंखें और उनका चिरयौवन साधक को अभूतपूर्व बल और शक्ति प्रदान करता है। योगिनी साधना के पश्चात् साधक के जीवन में असंभव जैसा कुछ होता ही नहीं है।

योगिनी अपने साधक को मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन की शक्ति प्रदान करती है। साधक का व्यक्तित्व, सौन्दर्य रस और आभा से युक्त हो जाता है।

तंत्र की अत्यन्त उच्चकोटि की साधनाएं योगिनी के साहचर्य के बिना पूर्ण होती ही नहीं है। योगिनी साधना के माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है, भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। योगिनी भोग और मोक्ष दोनों देने में सक्षम है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 59)

योगिनी दीक्षा

(योगिनी एकादशी - 10 जुलाई 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

प्रेम, सौन्दर्य, आकर्षण, सम्मोहन, तेज और माधुर्य जीवन्त चेतना की अभिव्यक्तियां हैं, जो साधक के व्यक्तित्व को प्रभावशाली और पूर्ण बनाती हैं।

तांत्रिक और आध्यात्मिक परम्पराओं में योगिनी शक्ति को दिव्य गुणों की अधिष्ठात्री माना गया है। योगिनी चेतना की जागृत शक्ति हैं, जो साधक के भीतर छिपी संभावनाओं को प्रकट करती हैं।

योगिनी शक्ति साधक को केवल बाहरी उपलब्धियां नहीं देती, बल्कि भीतर के परिवर्तन से जीवन को बदलती है।

योगिनी शक्ति कोई सामान्य उपासना से जागृत होने वाली शक्ति नहीं, सद्गुरु शक्तिपात से प्रकट होने वाली चेतना है।

सद्गुरुदेव शक्तिपात के माध्यम से साधक में योगिनी तत्व का बीजारोपण करते हैं, सुप्त शक्तियों को जाग्रत करते हैं। गुरु की शक्ति साधक के सूक्ष्म शक्ति चक्रों को स्पंदित करती है, आभामंडल को परिष्कृत करती है और उसे योगिनी अनुग्रह के योग्य बनाती है।

योगिनी दीक्षा से साधक को आकर्षण, तेज, वाणी सिद्धि, आन्तरिक रूपांतरण जैसे अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। योगिनी शक्ति जीवन को दिव्य, प्रभावशाली और पूर्ण बनाने वाली शक्ति है।

- योगिनी दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 61)